

भीतर

मुझे कविता में
नया दौर सीखना है।
मुझे मोहब्बत में
अभी और सीखना है।
चिलमलाहट सी होती है
भीतर ही भीतर
नए शब्दों को सीख कर
मुझे नए भावों का आयाम
अभी और सीखना है।
दबी हुई बातें हैं कुछ भीतर
जो दबा देती है
सदैव ही अस्मिता को मेरी
निकालकर उनको बाहर
अभी नया जहान जीना
अभी और सीखना है।



राजीव डोगरा

(टी.जी.टी हिंदी)

राजकीय उत्कृष्ट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

गाहलिया

साहित्य रत्न जुलाई